ISSN:2583-8849



संजय गुप्ता 'देवेश'
जोधपुर, राजस्थान

कुण्डलिया छंद

माता का दरबार है,सजा धजा यह आज।
आओ दर्शन को चलें,पूरे होंगे काज।।
पूरे होंगे काज,करें सब मिलकर पूजा।
जय माता दी बोल,मात सम और न दूजा।।
कह संजय देवेश,भवन को हर दिन जाता।
मन के पट को खोल,कहे नित माता-माता।।

माता का दरबार है,बड़ी निराली शान।
मूरत मन में देखिए,नयन बंद कर ध्यान।।
नयन बंद कर ध्यान, भजन माता के गाएँ।
कष्ट मिटे,मन शांत,यही हम आशिष पाएँ ।।
कह संजय देवेश,मात से जुड़ा जो नाता।
सफल हुआ यह जन्म,कृपा करती है माता।।

रोला छंद

आलस जीवन श्राप , सदा इससे है बचना।
सही समय पर काम,बड़ो का है यह कहना।।
आलस का परिणाम,शशक सो कर था हारा।
खत्म हुआ था खेल , बना वह तो बेचारा।।

समय चक्र आधीन , हुई सारी ही बातें।
इससे ही दिन रात , सृष्टि की ये सौगातें।।
इसकी महिमा जान,सदा जो काम करे हैं।
मिलती सदैव जीत,खुशी से सदा भरे हैं।।